जल संरक्षण
आज की मजबूरी

सेवा नन्दवाल

जल प्रबंधन से प्रेरित कुछ उपाय हमें गंभीरतापूर्वक आज़माने चाहिए। ग्रामीण शहरी तथा नगरीय क्षेत्र में जल बचाओ समिति का गठन किया जाए। सरकार द्वारा राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक स्तर पर जल प्रबंधन कानून बनाया जाए जिसमें जल का उचित प्रबंधन, जल उपयोग तथा भूजल संवर्धन करना कानून में समाहित हो।

वे सारे प्रयास जो गर्मी आने पर किए जाते हैं उन्हें पहले से ही लागू किया जाना चाहिए

अनेक विसंगतियों के बावजूद लाख टके का सवाल है... पानी की उपलब्धता और गुणवत्ता। उपलब्धता पर गौर फरमाएं तो बहुसंख्य आबादी को काम चलाने लायक पानी भी उपलब्ध नहीं हो पाता। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा तयशुदा मानदंडों तक पहुंच पाना हमारे लिए कल्पना से भी परे है। ऐसी बस्तियों की संख्या अनगिनत है जहां पर्याप्त पानी साल भर सुलभ नहीं हो पाता। अनेक जगहों पर दिन का शुभारंभ जल-महाभारत से होता है और अंत निराशाजनक पछतावे के साथ। गर्मी में हालात और बदतर हो जाते हैं जब खपत में एकाएक वृद्धि होने लगती है और आपूर्ति में अनिश्चितता। ऐसे में कई स्थानों पर खून-खराबा हो जाता है। दुःख की बात यह है कि इन सारी परिस्थितियों पर चिंतन-मनन भी गर्मियों में ही शुरु होता है, बाकी समय नहीं। असल में वे सारे प्रयास जो गर्मी आने पर किए जाते हैं उन्हें पहले से ही लागू किया जाना चाहिए।

इसी दौर में आंदोलन उपजते हैं और पानी बचाने के लुभावने संदेश प्रसारित किए जाते हैं। कुछ तात्कालिक उपायों पर युद्ध स्तर पर अमल भी किया जाता है पर जैसे ही बरसात की आरंभिक बूंदें धरती पर प्रकट होती हैं हम 'चातक' की भांति संतुष्ट हो जाते हैं। जल-समस्या की असली जड़ यही संतुष्टि भाव है। सरकार के साथ हमें भी जल बचाने, उसकी उपलब्धता सुनिश्चित करने जैसे मसलों पर सतत चिंतन करने की आवश्यकता है।

उपलब्धता के साथ पानी की गुणवत्ता भी अहम् सवाल है। जनगणना 2011 के प्राथमिक आंकड़ों से यह विदित होता है कि 20 प्रतिशत घरों में लोगों को पेयजल लाने के लिए आधे किलोमीटर से ज्यादा दूर का सफर तय करना पड़ता है और ग्रामीण भारत में तो यह स्थिति लगातार बिगड़ती ही जा रही है। यही नहीं 20 प्रतिशत से अधिक भारतीय आबादी असुरक्षित स्रोतों से पानी का प्रबंध करने को विवश है।

दरअसल जलसंकट की चुनौती का सामना करना किसी एक के बलबूते की बात नहीं। इसके लिए स्वयंसेवी संगठन, प्रशासन और मीडिया आदि के समन्वित प्रयासों की महती आवश्यकता है।

यह सही है कि दुनिया भर में जनसंख्या विस्फोट के कारण जल की गुणवत्ता पर गहरा असर पड़ा है। तेजी से अंधाधुंध शहर-पलायन, औद्योगीकरण, अनियोजित विकास, बढ़ती आबादी, बढ़ता प्रदूषण और कंक्रीट के जंगलों की बेतहाशा वृद्धि

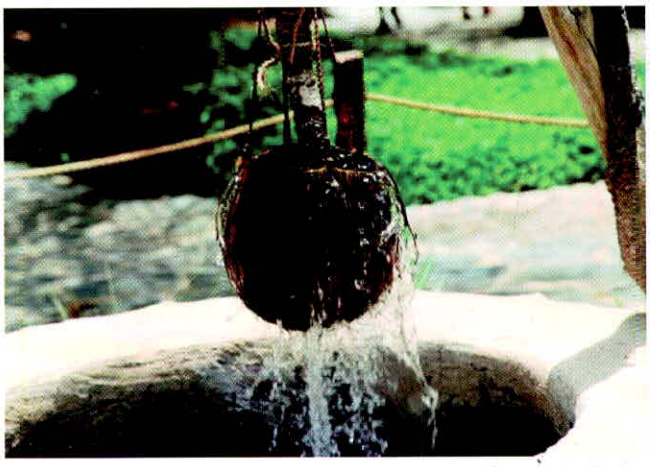

भूगर्भ से पानी निकालने की गति अधिक तीव्र है, पुनर्भरण की ओर ध्यान अपर्याप्त है। इसके समाप्त हो जाने के बाद चारों ओर हाहाकार के जो दृश्य उपस्थित होंगे उसकी कल्पना भी सिहरन पैदा करती है

ऐसी बस्तियों की संख्या अनगिनत है जहां पर्याप्त पानी साल भर सुलभ नहीं हो पाता

जलसंकट को और बढ़ाने में अहम् भूमिका निभा रही है। आज जल समस्या अकेले हमारे देश की ही नहीं समूची दुनिया की समस्या बन चुकी है।

जलचिंतक बार-बार अंदेशा जता रहे हैं कि यदि समय रहते जल संकट दूर करने के ठोस और कारगर कदम नहीं उठाए गए तो बात हाथ से निकल जाएगी और मानव अस्तित्व पर सवालिया निशान लग जाएंगे। यदि समय रहते हम कुछ सार्थक कर पाने में नाकाम रहे तो वह दिन दूर नहीं जब हम स्वयं का अस्तित्व समाप्त कर लेंगे।

अभी तक यह होता आया है कि हर साल जब गर्मियों में पानी के लिए परेशानी पैदा हो जाती है तो सारा ठीकरा बिना सोचे-समझे सरकार के माथे फोड़ दिया जाता है कि .... हमें जो पानी तक न दे सके ऐसी सरकार का क्या फायदा...लेकिन इस हेतु हम स्वयं पहल नहीं करते। कितनी दुःखद बात है कि जब पानी पर्याप्त आ जाता है उस दौरान घरों से घंटों तक पानी व्यर्थ बहते आसानी से देखा जा सकता है।

जब तक पानी की प्रत्येक बूंद का हिसाब नहीं रखा जाएगा और समाज को उसके महत्व के बारे में जानकारी नहीं प्रदान की जाएगी तथा पानी के अपव्यय के मामले में समुचित दंड हेतु प्रावधान नहीं किया जाएगा तब तक जलसंकट से छुटकारा मिल पाना मुमकिन नहीं लगता।

विचारणीय प्रश्न यह है कि जहां कभी अत्यधिक और अभूतपूर्व वर्षा हो जाती है वहां भी आश्वस्त क्यों नहीं हुआ जा सकता कि आगामी वर्षाकाल तक शुद्ध पेयजल की कोई समस्या नहीं आएगी। किसी स्थान पर बहुत अधिक वर्षा हो जाना भी उस स्थान पर शेष शुष्ककाल में जल-उपलब्धता की गारंटी क्यों नहीं देता? यह दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य इंगित करता है कि हमारा जल प्रबंधन तथा जल संरक्षण का ढांचा कितना दोषपूर्ण है।

स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है कि प्रकृति की उदारता के उपरांत हम क्यों अपने जीवन के लिए अति आवश्यक तत्व पानी की ओर से उदासीन बने हुए हैं। समाज का एक बड़ा तबका यह सोचता है कि जलप्रदाय करना शासन और स्वायत्त संस्थाओं की प्राथमिक जिम्मेदारी है।

मनुष्य की यह प्रवृत्ति है कि जब तक जल सुगमता से उपलब्ध है उसका निर्ममता से दुरुपयोग कर अंतिम सीमा तक उपभोग करें। यह सोच समस्या की गंभीरता को और बढ़ा रही है। आसमान से यदि चार हजार बूंदें पृथ्वी पर गिरती हैं तो हम उनमें से महज छः सौ बूंदों का उपयोग करते हैं। अगर प्रत्येक बूंद सहेजकर धरती का पेट भरते जाएं तो कभी कोई संकट पैदा ही न हो।

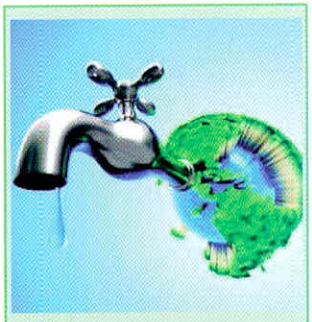

हकीकत यह है कि धरातल पर पानी तीन चौथाई होने के बावजूद पीने योग्य पानी एक सीमित मात्रा में है। उस सीमित मात्रा के पानी को इंसान ने अंधाधुंध खर्च किया है। नदी, तालाबों, झरनों को हम पहले ही प्रदूषण की भेंट चढ़ा चुके हैं लेकिन जो शेष मात्र हैं उन्हें अपनी मिल्कियत समझकर खर्च कर रहे हैं।

हकीकत यह है कि धरातल पर पानी तीन चौथाई होने के बावजूद पीने योग्य पानी एक सीमित मात्रा में है। उस सीमित मात्रा के पानी को इंसान ने अंधाधुंध खर्च किया है। नदी, तालाबों, झरनों को हम पहले ही प्रदूषण की भेंट चढ़ा चुके हैं लेकिन जो शेष मात्र हैं उन्हें अपनी मिल्कियत समझकर खर्च कर रहे हैं।

पोती के नाम दादा का खत

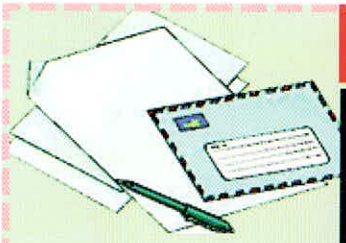

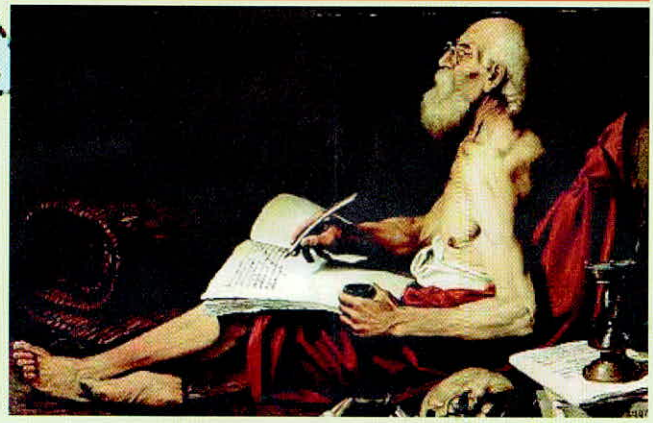

वैसे तो तुम वहां होस्टल में रहती हो इसलिए चिंता कम है फिर भी विगत कई दिनों से तुम्हारे समाचार न मिलने से परेशानी है। मेरी छठी इंद्रिय कह रही है कि तुम अवश्य किसी संकट से रू-ब-रू हो। पिछले दिनों टीवी न्यूज चैनलों और समाचार पत्रों के जरिए जाना था कि अन्य शहरों की भांति तुम्हारे शहर में भारी जल संकट व्याप्त है और नलों से पानी दो-चार दिन के अंतराल से टपक रहा है। ऐसे में तुम अपना काम कैसे चलाती होगी?

तसल्ली रखो यह समस्या अकेली तुम्हारी नहीं है बल्कि अनगिनत शहरों की है और समग्र देश की साझा है। पिछले वर्षों की तरह इस बार भी करोड़ों लोग जल संकट की गिरफ्त में हैं। मुझे लगता है जल से जूझना हमारी नियति बन गई है। लगता है प्रकृति हमसे रूठी हुई है। लेकिन सोचने वाली बात यह भी है कि अकारण कोई किसी से क्यों रूठेगा भला? क्या तुम मुझसे बेवजह रूठ सकती हो?

सच तो यह है कि आज धरती माता के साथ हमारा संबंध, व्यवहार उचित नहीं रहा। उसे अकारण जरूरत से ज्यादा परेशान किया जा रहा है। उसके ऊपर लगे पेड़-पौधों को काटकर और उसके गर्भ में संचित जल का अत्यधिक दोहन कर हम स्वयं के पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं।

तुम्हें अपने बचपन की बातें याद हैं? याद करो उस समय शहर में सीमेंट के जंगल नहीं हुआ करते थे। आबादी भी सीमित हुआ करती थी और उसी हिसाब से वाहन भी गिनती के ही थे। कहीं जाना होता तो सहज में घोड़ा गाड़ी उपलब्ध हो जाती थी। शहर से थोड़ी दूर निकलने पर ही जंगल का खुशनुमा एहसास होने लगता था। हर तरफ हरियाली की चादर बिछी दिखाई देती थी। पहाड़ियां नंगी नहीं होती थीं। उस पर खूब पेड़- पौधे लहलहाते थे और उनके बीच नदी-झरने कलकल प्रवाहित होते थे। थोड़ी-थोड़ी दूर पर कुएं-बावड़ियों के दर्शन हो जाया करते थे जिनमें लबालब जल भरा रहता था जो आंखों को ठंडक पहुंचाता था। लेकिन अब तो सारा परिदृश्य ही बदल गया है। स्वार्थ में अंधे होकर हम जीवनदायी पानी तक का महत्व नज़रअंदाज़ कर चुके हैं।

विकास के नाम पर शहरों में बरबादी का मंज़र शुरू हो गया। अनगिनत पेड़ उसके नाम शहीद कर दिए गए हैं और कृषि भूमि पर मकान-दुकानों का निर्माण होने लगा है। सड़कों के नाम पर अनेक जीवंत छायादार पेड़ों की बलि दे दी गई। दुख की बात यह है कि इस दौरान हमने प्रकृति को कुछ भी वापस नहीं लौटाया, बस लेते ही रहे। न ईमानदारी से वृक्षारोपण किया न वर्षा के जल को भूमिगत कराया, अपितु उसे नाले में व्यर्थ बह जाने दिया, कितने स्वार्थी हो गए हम।

पहले कुएं-बावड़ी से पानी भरने पर हाथ पैर को मशक्कत करना पड़ती थी इसलिए हमने बोरिंग का सहारा लिया और मात्र बटन दबाकर पाताल से पानी खींचने लगे और आज आलम यह है कि 100 फुट पर आसानी से उपलब्ध होने वाला पानी 500 फुट पर भी अनुपलब्ध है। धरती मां से क्या शिकवा शिकायत करें, अपराधी के कठघरे में हम स्वयं खड़े हैं, अपना ही अक्स हमें मुंह चिढ़ा रहा है।

अभी भी स्थिति बदतर नहीं हुई, नियंत्रण में है लेकिन हमें लगता है कि शायद अपनी गलतियों से हम सबक सीखना नहीं चाहते। विकास का एक ही पहलू है कि खूब पेड़ हों। पेड़ों की बहुतायत होगी तो अच्छी अमृत वर्षा होगी और बारिश से खुशहाली। किंतु हम तो कंक्रीट के जंगल खड़े कर रहे हैं, सभी दूर खनन कर रहे, पहाड़ों में आग लगा रहे हैं। यह तो विकास के नाम पर सरासर विनाश है।

पता है एक वयस्क पेड़ के नीचे भूमिगत दस हजार लीटर जल होता है। एक मनुष्य औसतन अपनी उम्र में पांच पेड़ की लकड़ी किसी न किसी कारण....घर बनाने, भोजन पकाने या अन्यत्र कार्य में उपयोग कर लेता है। किंतु वह पांच पेड़ भी प्रकृति को नहीं लौटाता। जैसी चिंता, सेवा और परवरिश हम अपने बच्चों की करते हैं वैसा ही रवैया प्रकृति के प्रति अपनाएं तो कितना अच्छा हो।

समूचा शहर, प्रदेश, देश... भीषण जलसंकट से जूझ रहा है। त्रासदी यह है कि व्यस्ततम जिंदगी में, परिवार की दिनचर्या में पानी जुटाना भी शामिल हो गया है। भीषण मशक्कत के बाद हलक सूखे हैं, प्यास बुझ नहीं रही, नदी, कुएं-बावड़ी जवाब दे चुके हैं। पनघटों पर महज खाली बर्तन बज रहे हैं, बूंदों की छमछम गायब है। इन हालातों में प्रश्न उठता है कि ऐसा क्यों हो रहा है, उसके लिए जिम्मेदार कौन है? इस बार भी वही उत्तर है, ...हम, हम और सिर्फ हम।

यह खौफ़नाक दृश्य हमने ही निर्मित किया है। हमने धरती का सीना छलनी कर हर जगह बोरवेल खोद डाले, पानी को बेहिसाब बहाया। पेड़ तो काटे ऊपर से कंक्रीट के जंगल खड़े कर दिए यानी अंडे तो अंडे मुर्गी भी हलाल करने को उतारू हैं।

जल नहीं होगा तो कल नहीं होगा, इस बात को ज़हन में अच्छी तरह रखकर हर व्यक्ति को धर्म की तरह पानी को बचाना होगा। पुराणों में कहा गया है कि दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है फिर क्यों नहीं हम बावड़ी-तालाब-कुओं को रिचार्ज कर पुनर्जीवित करते, पेड़-पौधों को संरक्षित करते हैं।

विचारणीय प्रश्न है कि हमारे यहां के आम नागरिक पेड़ और पानी के दुश्मन क्यों बने? ज़ाहिर है, कमाई के लालच में सब लोग अंधाधुंध पेड़ों की कटाई कर रहे हैं जबकि पानी की किल्लत और जमीन की उर्वरक शक्ति क्षीण होने की मुख्य वजह वही है।

वस्तुतः आज के विकट दौर में हमारा फर्ज बनता है कि हम जलसेवक बन पानी की बचत करें और प्रत्येक वर्ष कम से कम एक नया पेड़ अवश्य लगाएं ताकि आने वाली पीढ़ियां भूख प्यास से बेहाल न हो जाएं।

क्या हम ऐसा नहीं कर सकते.....

- उतना ही पानी गिलास में भरें जितनी प्यास हो। संकल्प लें, पेयजल न फेकेंगे न फेंकने देंगे बल्कि उसे अमृत सदृश समझेंगे।
- सीधे जग या गिलास से बिना जूठा किए पीने की आदत डालें तथा दूसरों को भी प्रोत्साहित करें।
- सब्जी, अन्न इत्यादि और बर्तन धोने के बाद उसका पानी, पौधों तथा शौचालयों में उपयोग करें।
- बर्तन धोने में कम पानी इस्तेमाल करें. चूल्हे, रसोईघर को धोने के बजाय पोंछने की आदत डालें।
- सीधे नल खोलकर सफाई के स्थान पर जग-मग से पानी लेकर उपयोग करें।
- सीधे नल खोल स्नान न करें, जग या शावर के सहारे कम से कम पानी से स्नान करें।
- कुछ ऐसा इंतजाम करें कि नहाने के पश्चात् बचा पानी शौचालय या बगीचे में काम आ जाए।
- वाहनों को पाइप लगाकर खूब धोने की बजाय गीले कपड़े से पोंछकर साफ करें।
- बागवानी में पेयजल व्यर्थ न करें। गमले और बगीचे में एक दिन के अंतराल से पानी डालें। पौधों को कम पानी की आदत डालें।
- सूर्य को जल अर्पित करते समय ध्यान रखें कि नीचे गिरता जल किसी न किसी पौधे की प्यास बुझाए।
- सुनिश्चित करें कि धर्मस्थलों पर प्रयुक्त जल बर्बाद न हो, उसकी निकासी पेड़-पौधों तक पहुंचे।
- ऐसे बीज बोएं जो कम पानी में पनप सके। हमारे पूर्वज पानी की खेती करते थे उनके तरीके जानकर वर्षाजल भराव की व्यवस्था करें।

ये सुझाव तुम अवश्य अपने होस्टल और आस-पड़ोस के लोगों में बताना और उनका मुस्तैदी से पालन करना।

आज जल समस्या अकेले हमारे देश की ही नहीं समूची दुनिया की समस्या बन चुकी है

पानी के लिए गंभीरतापूर्वक और ईमानदार प्रयास इसलिए वांछनीय हैं क्योंकि इसके बिना जीवन ही संभव नहीं रहेगा

भूगर्भ से पानी निकालने की गति अधिक तीव्र है, पुनर्भरण की ओर ध्यान अपर्याप्त है। इसके समाप्त हो जाने के बाद चारों ओर हाहाकार के जो दृश्य उपस्थित होंगे उसकी कल्पना भी सिहरन पैदा करती है। पानी के लिए संभावित तृतीय विश्वयुद्ध तो बाद की बात है, हम अपने मध्य ही ऐसे घमासान के भागीदार होंगे कि विश्वयुद्ध के दर्शक बनना हमें नसीब नहीं होगा।

जल प्रबंधन से प्रेरित कुछ उपाय हमें गंभीरतापूर्वक आज़माने चाहिए। ग्रामीण शहरी तथा नगरीय क्षेत्र में जल बचाओ समिति का गठन किया जाए। सरकार द्वारा राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक स्तर पर जल प्रबंधन कानून बनाया जाए जिसमें जल का उचित प्रबंधन, जल उपयोग तथा भूजल संवर्धन करना कानून में समाहित हो।

समाज का एक बड़ा तबका यह सोचता है कि जलप्रदाय करना शासन और स्वायत्त संस्थाओं की प्राथमिक जिम्मेदारी है।

व्यर्थ पानी बहाने वालों पर दंडात्मक कार्रवाई का प्रावधान होना चाहिए। आस-पास के कुओं-बावड़ियों को साफ कराया जाना लाज़िमी होगा और जिनमें पानी नहीं आता हो उन्हें रिचार्ज कराया जाना चाहिए। तालाब गहरीकरण और पोखरों में पानी इकट्ठा करवाने के प्रयास भी आवश्यक हैं। गर्मी के मौसम में भवन निर्माण, नलकूप खनन व कुएं खुदवाने पर आवश्यक रूप से प्रतिबंध लगाया जाए।

ये कुछ ऐसे प्रयास हैं जिनमें से अधिक से अधिक हम अपने स्तर पर कर सकते हैं। हर जिम्मेवारी सरकार पर डालने के बजाय अपने स्तर पर की जाने वाली कोशिशों में तेजी लानी चाहिए। पानी के लिए गंभीरतापूर्वक और ईमानदार प्रयास इसलिए वांछनीय हैं क्योंकि इसके बिना जीवन ही संभव नहीं रहेगा। आने वाली पीढ़ी हमें लापरवाह, बेरहम की संज्ञा से निरूपित कर कठघरे में खड़ी कर दे, ऐसी नौबत से बचने के लिए हमें जलबचत के प्रयास में तेजी लानी चाहिए।

अस्तु जल-संरक्षण आज की आवश्यकता नहीं बल्कि मजबूरी बन गया है। ऐसे में हर संभव तरीके से पानी बचाना प्रत्येक नागरिक का परम् धर्म बन जाना चाहिए।

इसी जल संकट एवं जल सरंक्षण हेतु दादा ने अपनी पोती के नाम कुछ इस प्रकार एक खत लिखा।

जल काव्य

मजबूरी

बार-बार जलचिंतक
हमें चेतावनी देकर
कर रहे यूं आगाह।
अगर अब भी न जागे
तो देर हो जाएगी बहुत
फिर न मिलेगी कहीं पनाह।
भविष्यवाणी की गई थी
तृतीय विश्वयुद्ध को लेकर कि
वह पानी को लेकर ठनेगा।
लेकिन लड़ने के लिए
जीवित रहना है जरूरी
क्या बिन पानी संभव होगा?
सत्य तो यह है कि
जल संरक्षण आज जरूरत नहीं
बन गया है मजबूरी।
हम सब से रख सकते
पर पानी से मुमकिन नहीं
रखना तनिक भी दूरी।
इसलिए जल संकट को समझ
उसके निराकरण में
अपना सर्वस्व लगाएं।
अपनी जीवन शैली बदलें
जल का मोल पहचानें
और हर हाल में उसे बचाएं।

संपर्क सूत्र :
डॉ. सेवा नन्दवाल, 98 डी के-1, स्कीम 74-सी, विजय नगर,
इन्दौर- 452 010 [मो. : 09826878091]